VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

नीतिशतक में कवि भर्तृहरि का मानवजीवन के लिए उचित संदेश

डॉ.रघुभाई कानजीभाई पटेल

आसीस्टन्ट प्रोफेसर , संस्कृत विभाग,
धी.के.एन.एस.बी.एल.आर्ट्स एन्ड कॉमर्स महाविद्यालय, खेरालु.
जि.मेहसाना. गुजरात.
दूरभाष – ९९०९२९१४९४

सारांश

संस्कृत साहित्य में मानव जीवन को आलोकित करने वाली लोककथाओं-नैतिक कथाओं का प्रादुर्भाव हुआ है। शतककाव्य की परंपरा में कवि भर्तृहरि की नीतिशतक, शृंगारशतक, वैराग्यशतक आदि रचनाएँ मनुष्य के व्यावहारिक जीवन को छूने वाले विषय प्रस्तुत करती हैं। नीतिशतक में कवि भर्तृहरि ने एक ओर सज्जनों की प्रशंसा की है तो दूसरी ओर दुष्टों की निंदा की है। यहाँ कवि ने विभिन्न दृष्टान्तों के माध्यम से ब्रह्मा को भी समझाने में असमर्थ दिखाकर मूर्खों का उपहास किया है। नीतिशतक में सद्गुणों और सज्जनों की महिमा है। और विद्या धन को सभी धनों में सर्वोत्तम कहा गया है। यहां दूध और पानी तथा शाम और सुबह की परछाइयों के उदाहरणों के माध्यम से सज्जनों और दुर्जनों की दोस्ती के बीच के अंतर को दर्शाया गया है। साथ ही यहां कर्म की गति, शुद्ध चरित्र, कठोर पुरुषार्थ , शक्तिशाली प्रारब्ध, धन का महत्व, सत्संगति, बुराइयों से भरी राजनीति आदि पर भी प्रकाश डाला गया है। यहाँ कवि ने विभिन्न व्यावहारिक उदाहरण देकर मानव जीवन को छूने वाली सभी बातों को समझाने का प्रयास किया है।

मुख्य शब्द: नीति शब्द का अर्थ - विद्या का गौरव- सदाचार – दुर्जन निंदा - मूर्खों का उपहास - अटल कर्म - पुरुषार्थ - मित्रता - धन का महत्व।

प्रस्तावना

संस्कृत साहित्य विश्व का सबसे प्राचीन साहित्य है। साहित्य के साथ भाषा पर भी नजर डालें तो संस्कृत एक प्राचीन भाषा है। इसमें ऋग्वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक का साहित्य शामिल है। हमारे प्राचीन ग्रंथ जैसे वेद, पुराण, आरण्यक ग्रंथ, ब्राह्मण ग्रंथ और उपनिषद आदि हमारी सांस्कृतिक विरासत माने जाते हैं। इसमें जीवनमें उपयोगी शिक्षाएँ दी हैं, साथ ही आख्यायिका, कथा, महाकाव्य, खण्डकाव्य, लघुकाव्य, मुक्तकाव्य, शतककाव्य आदि साहित्य का उद्भव हुआ है।
नीति शब्द 'नि' धातु में क्तीं प्रत्यय जोड़ने से बना है। जिसका अर्थ है नियन्ते उन् नियन्ते अत्रानया वा ।१ अर्थात् जो सही मार्ग की ओर ले जाता है, जिससे जीवन में उन्नति हो, समाज का कल्याण हो। नैतिक ग्रंथों को 'नीतिकाव्य' कहा जाता है, जो ऐसी कविताएँ या कहानियाँ हैं जिनमें मानव जीवन में नैतिक और राजनीतिक विषयों का उपदेश दिया जाता है। संस्कृत मुक्तक साहित्य में 'शतक' काव्यों की परंपरा में कवि भर्तृहरि का अमूल्य योगदान है। कवि भर्तृहरि संस्कृत साहित्य में शतकत्रय के रचयिता के रूप में प्रसिद्ध हैं। कवि भर्तृहरि के तीन शतक हैं (1) श्रृंगार शतक (२) नीति शतक और (3) वैराग्य शतक।

कवि भर्तृहरि ने अनेक नीतिगत विषयों को बहुत ही प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। कवि ने अपनी नैतिक शिक्षाओं से मानवजाति को लाभान्वित किया है। उनकी नैतिक शिक्षाएँ अनंत काल तक मानव जाति को प्रेरित करती रहेंगी। कवि भर्तृहरि की नीति लोगों को प्रेरणा देती है, सही दिशा दिखाती है और सभी का जीवन सफल बनाती है। कवि भर्तृहरि ने लगभग ११० श्लोकों में मानव जीवन को छूने वाले अनेक नैतिक विषयों का वर्णन किया है। नीतिशतक में भर्तृहरि स्वयं एक अच्छे समाजशास्त्री होने के साथ-साथ एक अच्छे प्रतिक्रियाशील कवि भी थे, उन्होंने उदार पुरुष, सज्जन प्रशंसा, सत्संगति, विद्या, कर्म की श्रेष्ठता, भाग्य, शील, धन की महिमा जैसे आदर्श मानव जीवन को छूने वाले कई विषयों पर कविताएँ लिखीं। नीतिशतक में कवि भर्तृहरि ने उन महिमाओं का प्रतिपादन किया है जो समाज के व्यवहार में उपयोगी हैं। नीतिशतक में किसी एक विषय का उल्लेख नहीं है बल्कि कई विषयों का काव्यात्मक ढंग से रोचक शैली में वर्णन किया गया है। कवि ने जीवन के विपरीत पहलुओं को बुना है। निन्दा-सज्जनता, विद्या-अविद्या, अज्ञानी-विद्वान, बुद्धिमान-नासमझ, धैर्यवान-अधीर, मूर्ख-सज्जन जैसी बातें पाठक को आकर्षक लगती हैं। नैतिकता एक ऐसा मार्ग है। जिसमें समाज के अमीर-गरीब, स्वामी-सेवक हर व्यक्ति के लिए आदर्श जीवन का प्रेरणा स्रोत है।
कवि भर्तृहरि को जीवन के विभिन्न अनुभवों का गहरा ज्ञान है। जीवन के विभिन्न अनुभवों का अनुभव करके और उन्हें कविता में रोचक शैली में चित्रित करके उन्हें आदर्श जीवन शैली की शिक्षा देता है। नीतिशतक में सिखाई गई जीवन जीने की कला के संदर्भ में हमें सदाचारपूर्ण जीवन के सुंदर निर्देश मिलते हैं। जैसे- मूर्खस्य नास्त्यौषधम् | विध्याधनं सर्वधनप्रधानम् | वाग्भूषणं भूषणम् | विध्याविहिन: पशु: | सत्संगति: कथय किं न करोति पुसाम् | ज्ञान का महत्व और यह मानव जीवन में कितना उपयोगी है, इसका वर्णन करते हुए कवि कहते हैं, ज्ञान वास्तव में मनुष्य का सर्वोच्च एवं गुप्त धन है। विद्या यश सुख प्रदान करने वाले गुरुओं की गुरु भी हैं। राजाओं में सर्वत्र ज्ञान की पूजा होती है, धन की नहीं। ज्ञान के बिना मनुष्य पशु के समान है।[२] सदविद्या के माध्यम से मनुष्य जीवन के अंतिम लक्ष्य मोक्ष तक पहुँच सकता है। अनेक कवियों ने विद्या की प्रशंसा की है। वैदिक उपनिषद और गीता भी विद्या की प्रशंसा करते हैं। निम्न और श्रेष्ठ प्रकृति के व्यक्तियों के स्वभाव को दर्शाने के लिए यहां कुत्तों और हाथियों के उदाहरण दिए गए हैं।[३] समाज में भी कुछ लोग अपने स्वार्थ के लिए दूसरे व्यक्ति की प्रशंसा करते नहीं थकते। जब कोई स्वाभिमानी व्यक्ति स्वार्थ नहीं देखता, तो वह किसी के एहसान के आगे नहीं झुकता या स्वाभिमान की कीमत पर दूसरे व्यक्ति की झूठी चापलूसी नहीं करता। आदर्श जीवन के लिए परिश्रमशीलता, प्रशंसनीय स्वभाव और परोपकार बहुत महत्वपूर्ण हो जाते हैं। मनुष्य के शरीर में आलस्य उसका सबसे बड़ा शत्रु है, परन्तु प्रयत्नशील मनुष्य कभी दु:ख नहीं भोगता। मनुष्य को आलस्य त्यागकर प्रयत्न करना चाहिए।

आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपु: ।
नात्स्युद्यमसमो बंधु: कुर्वाणो नावसीदति ॥

कवि कहते हैं कि यदि किसी समाज का कोई गुणी व्यक्ति या नेता आदर्श आचरण करे और बाकी लोग उसका अनुसरण करें तो एक स्वस्थ आदर्श समाज का रूपांतर हो जाता है। इंसान को जीवन में आने वाले खतरों को सहना चाहिए और समुद्र की तरह खुले विचारों वाला बनना चाहिए। समुद्र के एक ओर भगवान विष्णु रहते हैं और दूसरी ओर राक्षस रहते हैं। एक तरफ शरणार्थियों की भीड़ है तो दूसरी तरफ सरदार हैं। इस प्रकार समुद्र धैर्यपूर्वक अपने दिन व्यतीत करता है, विरोधी तत्वों को पापों के पेट में डालता है।

इत: स्वपिति केशव: कुलमितस्तदीयद्विषा-
मितश्च शरणार्थिन: शिखरिणां गणा: शेरते ।

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

इतोडपि वडवानल: सह समस्तसंवर्तकैरहो
अहो विततमूर्जितं भरसहं च सिंधोर्वपु: ॥[४]

जीवन में साहित्य, संगीत, कला के महत्व को समझाते हुए कवि कहते हैं,
साहित्य संगीतकलाविहीनः साक्षात्पशुः पुच्छविषाणहीनः ।[५]

अर्थात् साहित्य, संगीत, मूर्तिकला आदि कलाओं के बिना मनुष्य पूँछ और सींग के बिना साक्षात् पशु के समान है। साहित्य लोगों को करीब लाता है। संगीत मनुष्य को ईश्वर की ओर ले जाता है और 64 कलाएँ मनुष्य को विनम्र बनाती हैं। जिस समाज में ऐसे सदस्य अधिक होते हैं वह समाज उत्तरोत्तर प्रगति करता है। साहित्य आदि के अभाव में मनुष्य संकीर्ण मानसिकता वाला एवं स्वार्थी हो जाता है। वह दूसरों के हित के बारे में नहीं सोचता।

भर्तृहरि ने नीतिशतक में हमें मानव जीवन में उपयोगी उपदेश भी दिये हैं। जो जीवन में बहुत उपयोगी हो सकता है, इसमें विभिन्न छंदों में मानव व्यवहार और सामाजिक संबंधों के बारे में बताया गया है, समाज के लिए उपयोगी विभिन्न विषयों की चर्चा शामिल है। तदनुसार, इस नीतिशतक के 110 श्लोक विभिन्न विषयों से संबंधित हैं। यहां कोई विशिष्ट सिद्धांत या धर्म का मानदंड नहीं हैं, बल्कि जीवन के लिए उपयोगी बौद्ध शिक्षाएं प्राप्त होती हैं। इसमें सज्जन की प्रशंसा, दुर्गुण की निंदा, गुण का सम्मान, कर्म की महिमा, स्वाभिमान की श्रेष्ठता, मित्रता आदि शामिल हैं जो मानव जीवन के लिए उपयोगी और शिक्षाप्रद साबित होते हैं।

नीतिशतक में मानव जीवन के श्रेष्ठ गुणों का गुणगान किया गया है। इसमें फालतू ज्ञान की निंदा और ज्ञान की प्रशंसा, नीच के स्वभाव का सूक्ष्म अवलोकन और सज्जन के गुणों का गुणगान शामिल है। महापुरुषों के महान गुण, मित्रता, कर्मशक्ति, ज्ञान आदि सरल, रोचक भाषा में दिये गये हैं। भर्तृहरि मूर्ख के लिए यह भी कहते हैं कि इसकी व्याख्या स्वयं भगवान भी नहीं कर सकते। वह स्वयं के साथ-साथ दूसरों का भी विनाश चाहता है। वह न तो अज्ञानी है और न ही बुद्धिमान। मूर्ख के लिए कहा गया है कि मगरमच्छ के मुँह से मोती निकाला जा सकता है, गरजते हुए समुद्र में तैराया जा सकता है, फुफकारते साँप को माला बनाकर पहना जा सकता है, रेत से तेल निकाली जा सकती है। लेकिन जिद्दी मूर्ख को मनाया नहीं जा सकता।६ कवि कहता है, "इंद्र के घर में मूर्खों के साथ रहने की अपेक्षा वनवासियों के साथ दुर्गम पहाड़ों पर अकेले घूमना बेहतर है।

भर्तृहरि ने नीतिशतक में सज्जनों की प्रशंसा करने के लिए अपनी कलम छोड़ी है। उसने अनेक प्रकार से अपनी महिमा की है, वह सज्जन न्याय में प्रेम दिखाता है और अपने प्राणों की कीमत पर भी पाप नहीं करता। सज्जन लोग सदैव उचित व्यवहार में प्रेम दिखाते हैं और प्राण की कीमत पर भी पाप नहीं करते। वह कठिन और महान कार्य करना जारी रखता है। उनकी गतिविधि की तुलना शेषनाग द्वारा पृथ्वी को फण पर धारण करने, कूर्म द्वारा शेषनाग को धारण करने, विशाल महासागर द्वारा कूर्म को आश्रय देने आदि से की जा सकती है।७ सज्जन कभी स्वार्थी नहीं होते। वे चुपचाप दान देते हैं और मेहमानों का सत्कार करते हैं और चुप रहते हैं। उपकार करके वे कभी उसका बखान भी नहीं करते। उसके हाथ दान से सुशोभित हैं, उसका सिर नम्रता से झुका हुआ है, उसका मुँह सत्य से सुशोभित है, उसकी भुजाएँ विजय की शक्ति से सुशोभित हैं।

मनुष्य के जीवन में सुख, दुःख, धन, क्लेश आदि भाग्य के अनुसार आते हैं। भर्तृहरि कहते हैं, "मनुष्य के माथे पर जो धन लिखा होता है, वह रेगिस्तान में भी पाया जाता है और यदि प्रारब्ध में नहीं है, तो मनुष्य मेरु पर्वत पर भी जाता है, जो सोने से बना है, तो भी उसे वहां से कुछ भी नहीं मिलता है। "उनके लिए कवि एक उदाहरण देता है कि घड़ा अपनी क्षमता के अनुसार कुएं से और समुद्र से पानी प्राप्त करता है। क्षमता से अधिक नहीं मिलता है।"८ इस प्रकार मनुष्य अपनी क्षमता से अधिक कुछ भी प्राप्त नहीं कर सकता। अतः हमें भी उसी के अनुरूप पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ पर प्रारब्ध की प्रधानता दर्शाते हुए भर्तृहरि कहते हैं, "करंदिया में एक सर्प भूख से व्याकुल होकर बंधा हुआ था। उसने जीने की आशा भी छोड़ दी थी। वहाँ एक चूहा करंदिया में बिल बनाकर घुस गया, साँप को भोजन मिल गया संयोग से, और उस छेद से साँप निकल आया। इसमें सचमुच प्रारब्ध शक्तिशाली है। "९ राहु सूर्य और चंद्रमा जैसे शक्तिशाली ग्रहों को भी प्रभावित करता है। उल्लू को दिन में दिखाई नहीं देता, इसमें सूर्य का क्या दोष? चातक के मुँह में वर्षा की धारा न पडने में बादल का क्या दोष? इंसान की किस्मत में जो लिखा है उसमें कोई बदलाव नहीं होता है। यानी वह अपने काम के हिसाब से काम करता रहता है।

मनुष्य, देवी-देवता भी कर्म के अधीन हैं। जैसा कर्म, वैसा फल मिलता है। गीता में भी कहा गया है- कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन.....। दूसरे शब्दों में कहा जाता है कि कर्म में ही आपका अधिकार है। कर्म, जो सृष्टि रचना के लिए ब्रह्मा को कुम्हार के रूप में नियुक्त करता है, विष्णु को 10 अवतार लेने पर मजबूर करता है, महादेव को हाथ में खोपड़ी लेकर भीख मांगने पर मजबूर करता है। कर्म को प्रणाम, जो सूर्य को कर्म के अधीन होकर आकाश में विचरण कराता है। उच्च कुल, शुद्ध चरित्र, विद्या, समर्पित सेवा - इनमें से कोई भी व्यक्ति को लाभ नहीं पहुँचाता। पूर्व जन्म में किये गये कर्म ही मनुष्य को सही समय पर फल देते हैं।

भर्तृहरि ने मित्रता के विषय पर विभिन्न विचार व्यक्त किये हैं। दुर्जनों और सज्जनों की दोस्ती के बीच अंतर दिखाते हुए कवि कहते हैं कि दुर्जनों की दोस्ती दिन की सुबह की छाया की तरह होती है, जबकि सज्जनों की दोस्ती शाम की छाया की तरह होती है।१० जैसे सुबह की छाया कुछ समय तक रहती है, फिर धीरे-धीरे ख़त्म हो जाती है। लेकिन शाम की छाया धीरे-धीरे बढ़ती जाती है। कवि यह दर्शाने के लिए दूध और पानी का दृष्टान्त उद्धृत करता है कि सज्जनों की मित्रता समर्पित होती है। जब दूध पानी से मिलता है तो वह अपने सारे गुण पानी को दे देता है, फिर जब दूध को आग पर रखा जाता है तो पानी दूध की गर्मी को सोख लेता है, मित्र की विपत्ति देखकर दूध ऊपर उठता है और आग में जाना चाहता है। वहां पानी दूध की मदद से बाहर से आता है इसलिए दूध शांत हो जाता है।[११] इस प्रकार इस दृष्टान्त के अनुसार सज्जनों की मित्रता इसी प्रकार की होती है।

इसके अलावा विद्या, गुणों का गौरव , धन की सराहना आदि बातों से मानव जीवन की शिक्षा मिलती है। इसके अलावा भर्तृहरि ने कुल के उत्थान, सच्चे पुत्र, राजनीति, साहित्य आदि, कला और विद्या के गुण, तप आदि कुछ विषयों पर भी लिखा है। यह सब समाज के व्यापक लेकिन सूक्ष्म अवलोकन को दर्शाता है। और ये सभी बातें मनुष्य के लिए जीवन में शिक्षाप्रद बन जाती हैं। जिस विषय के बारे में संस्कृत साहित्य में बहुत ही सरलता और अच्छे ढंग से वर्णन किया गया है। इस प्रकार भर्तृहरि के इस नीतिशतक में हमें जीवन में उपयोगी शिक्षाएँ मिलती हैं। साथ ही उनके द्वारा रचित अन्य ग्रंथ वैराग्यशतक और शृंगारशतक भी मानव जीवन की उचित शिक्षा देते हैं। ये नीतिगत बातें हमें अपने साहित्य में अनेक स्थानों पर किसी न किसी रूप में मिलती हैं। और यह समाज के हर सदस्य और व्यक्ति के लिए हर तरह से उपयोगी हो सकता है। इस प्रकार नीतिशतक में मनुष्य को आदर्श जीवन जीने की सर्वोत्तम कला का उपदेश दिया गया है। भर्तृहरि का प्रसिद्ध शतक काव्य 'नीतिशतक' हर व्यक्ति के लिए मार्गदर्शक का काम करेगा और कल्प वृक्ष की तरह मनोकामना पूरी करेगा। इस बात में संदेह की कोई गुंजाइश नहीं है.

संदर्भ

1. संस्कृत साहित्य में नीतिकथा का उद्गम एवं विकास
2. नीतिशतकम् – श्लोक-१६
3. नीतिशतकम् – श्लोक-२३
4. नीतिशतकम् – श्लोक-६७
5. नीतिशतकम् – श्लोक-१०२
6. नीतिशतकम् – श्लोक-४

http://vidyajournal.org

VIDYA - A JOURNAL OF GUJARAT UNIVERSITY

Peer-Reviewed, Multidisciplinary & Multilingual Journal

ISSN: 2321-1520 **E-ISSN:** 2583-3537

7. नीतिशतकम् – श्लोक-२७
8. नीतिशतकम् – श्लोक-४०
9. नीतिशतकम् – श्लोक-८२
10. नीतिशतकम् – श्लोक-४९
11. नीतिशतकम् – श्लोक-६६

संदर्भग्रंथ सूची

1. वैदिक दर्शन – आचार्य उदयवीर शास्त्री
2. नीतिशतकम्। - प्रा. सुरेशचंद्र.जे.दवे – सरस्वती पुस्तक भंडार, अहमदाबाद
3. नीतिशतकम्। - गोपाल शर्मा- हंसा प्रकाशन, जयपुर
4. नीतिशतकम्। - डॉ. निरंजन पाठक, पार्श्व प्रकाशन, अहमदाबाद
5. वैराग्यशतकम् - डॉ. अजय त्रिवेदी
6. शृंगारशतकम् - प्रा. विनय भट्ट
7. श्रीमद्भगवद्गीता – गीता प्रेस, गोरखपुर.

http://vidyajournal.org